PRGI : APHIN/26/A3657

पेन पॉवर

हिंदी दैनिक समाचार पत्र

वर्ष - 1 अंक - 25 मंगलवार, अगस्त 4, 2026 विशाखापट्टनम संपादकः गंट्यादा अप्पाराव पृष्ठों. 4 मूल्य. 1रु

डेटा-आधारित शासन को प्राथमिकता दी जाएः मुख्यमंत्री एन. चंद्रबाबू नायडू

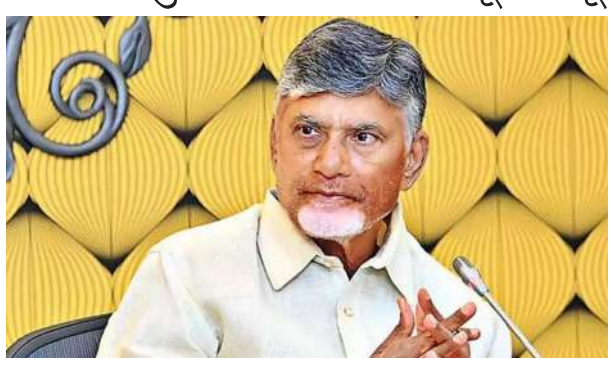

(पेन पॉवर न्यूज):
अमरावती, 3 अगस्तः आंध्र प्रदेश के मुख्यमंत्री एन. चंद्रबाबू नायडू ने अधिकारियों को सभी विभागों में डेटा–आधारित शासन को प्राथमिकता देने के निर्देश दिए। सोमवार को मुख्यमंत्री ने रियल टाइम गवर्नेंस सोसाइटी में डेटा–आधारित निर्णय प्रक्रिया पर समीक्षा बैठक की और अधिकारियों को इस दिशा में आवश्यक मार्गदर्शन दिया। इस समीक्षा बैठक में आंध्र प्रदेश के मुख्य सचिव के. साई प्रसाद तथा सूचना प्रौद्योगिकी (आईटी), आरटीजीएस, कृषि, नगर प्रशासन और कल्याण विभागों के वरिष्ठ अधिकारी उपस्थित रहे।

मुख्यमंत्री ने रियल टाइम गवर्नेंस प्रणाली के कार्यों की समीक्षा की। उन्होंने कहा कि त्ळ्ळ के माध्यम से शासन को अधिक प्रभावी, पारदर्शी और आम जनता के लिए अधिक सुलभ बनाया जाना चाहिए। उन्होंने सरकारी निर्णयों में डेटा के उपयोग को बढ़ाने के निर्देश दिए तथा विभिन्न विभागों के बीच डेटा के समन्वय और एकीकरण को मजबूत करने पर अधिकारियों के साथ विस्तृत चर्चा की।

मेरी जीत बीजेपी के लिए बड़ा संदेश– पीके

पटना (एजेंसी): बिहार के बंकिपुर विधानसभा उपचुनाव में ऐतिहासिक जीत दर्ज करने के बाद जन सुराज पार्टी के प्रमुख और चुनावी रणनीतिकार प्रशांत किशोर (पीके) ने भाजपा पर तीखा हमला बोला। उन्होंने कहा कि यह सिर्फ एक विधानसभा सीट की जीत नहीं, बल्कि बिहार की जनता की ओर से भाजपा नेतृत्व के लिए स्पष्ट संदेश है। पीके ने कहा कि यह परिणाम दिखाता है कि राज्य की जनता अब जाति और धर्म की राजनीति से आगे बढ़कर बदलाव चाहती है। प्रशांत किशोर ने बिहार के मुख्यमंत्री सम्राट चौधरी पर भी निशाना साधते हुए कहा कि राज्य के हित में नेतृत्व परिवर्तन की जरूरत है। उन्होंने आरोप लगाया कि आपराधिक छवि वाले व्यक्ति को मुख्यमंत्री पद पर नहीं रहना चाहिए और राज्य को साफ–सुथरी छवि वाले नेतृत्व की आवश्यकता है। उन्होंने कहा कि बिहार में शिक्षा, रोजगार और युवाओं के भविष्य को बेहतर बनाने के लिए सुशासन और पारदर्शी प्रशासन जरूरी है।

गुजरात मॉडल जैसी विकास नीति की वकालत

पीके ने कहा कि यदि भाजपा वास्तव में बिहार का विकास चाहती है तो उसे गुजरात की तरह बुनियादी ढांचे, उद्योगों और रोजगार सृजन पर गंभीरता से काम करना चाहिए। उन्होंने कहा कि राज्य में विकास और रोजगार के पर्याप्त अवसर उपलब्ध होंगे तो युवाओं का दूसरे राज्यों की ओर पलायन भी रुकेगा।

जीत को बताया बदलाव का संकेत

प्रशांत किशोर ने अपनी जीत को बिहार की राजनीति में बदलाव की शुरुआत बताते हुए कहा कि जनता अब विकास, रोजगार और सुशासन के मुद्दों पर मतदान कर रही है। उन्होंने विश्वास जताया कि यह परिणाम भविष्य की राजनीति की दिशा तय करने वाला साबित होगा।

जगन बेशर्मी से विरूपाक्षी का बचाव कर रहे हैंः मंत्री कोलुसु पार्थसारथी

(पेन पॉवर न्यूज):
अमरावती, 3 अगस्तः आंध्र प्रदेश के सूचना एवं जनसंपर्क मंत्री कोलुसु पार्थसारथी ने वाईएसआर कांग्रेस पार्टी (वाईएसआरसीपी) के अध्यक्ष वाई.एस. जगन मोहन रेड्डी पर तीखा हमला बोला। उन्होंने आरोप लगाया कि विधायक विरूपाक्षी के कथित कृत्य की निंदा करने के बजाय जगन उनका ''बेशर्मी से बचाव'' कर रहे हैं।

सोमवार को अमरावती में मीडिया से बातचीत करते हुए मंत्री ने आरोप लगाया कि वाईएसआरसीपी विधायक ने अनुसूचित जाति और पिछड़ा वर्ग से संबंधित एक महिला के कपड़े फाड़कर ''दुशासन'' जैसा व्यवहार किया। उन्होंने कहा कि राज्य की जनता वाईएसआरसीपी के कथित अत्याचारों को देख रही है और इस पार्टी को राज्य से बाहर करने का मन बना चुकी है।

'कुल्हाड़ी पार्टी युवाओं का भविष्य बर्बाद कर रही है'

पार्थसारथी ने आरोप लगाया कि जहां मुख्यमंत्री एन. चंद्रबाबू नायडू युवाओं के भविष्य के लिए काम कर रहे हैं, वहीं ''कुल्हाड़ी पार्टी'' (वाईएसआरसीपी के लिए मंत्री द्वारा प्रयुक्त संदर्भ) उनके जीवन को बर्बाद कर रही है। उन्होंने तंज कसते हुए कहा कि इस पार्टी में बने रहने की सबसे बड़ी योग्यता जनसेवा नहीं, बल्कि अराजकता और अपराध करना है। उन्होंने आरोप लगाया कि जितने बड़े अपराध किए जाते हैं, वाई.एस. जगन मोहन रेड्डी के यहां उतना ही अधिक महत्व मिलता है।

मंत्री ने यह भी आरोप लगाया कि अपराध में पकड़े जाने के बाद वाईएसआरसीपी नेता ''राजनीतिक प्रतिशोध'' का आरोप लगाकर सहानुभूति हासिल करने की कोशिश करते हैं। उन्होंने चेतावनी दी कि कानून–व्यवस्था भंग करने वाली किसी भी अराजक शक्ति को बख्शा नहीं जाएगा। पार्थसारथी ने जगन के 45 वर्ष से अधिक आयु के गरीब लोगों को लेकर कथित बयान की भी आलोचना की तथा श्रीकाकुलम में एक महिला पुलिसकर्मी के साथ कथित दुर्व्यवहार का आरोप लगाया।

'युवक को बेरहमी से पीटा गया'

मंत्री ने आरोप लगाया कि कमजोर वर्ग के एक युवक को इतनी बुरी तरह पीटा गया कि उसकी जान पर बन आई। उन्होंने कहा कि एक युवती पर कथित रूप से हमला करने वाले व्यक्ति को पीड़ित के रूप में पेश करने की कोशिश की जा रही है।

उन्होंने यह भी सवाल उठाया कि कथित अपहरण, महिलाओं, मुख्यमंत्री और गृह मंत्री का अपमान तथा आपत्तिजनक टिप्पणियों जैसी घटनाओं की वाई.एस. जगन मोहन रेड्डी ने निंदा क्यों नहीं की।

पार्थसारथी ने कहा कि जनता द्वारा चुनाव में वाईएसआरसीपी को बुरी तरह नकारे जाने के बावजूद उसके नेताओं ने कोई सबक नहीं सीखा है। उन्होंने यह भी प्रश्न किया कि दलित महिलाओं के साथ कथित दुर्व्यवहार और उनके कपड़े फाड़े जाने जैसी घटनाओं की जगन रेड्डी निंदा क्यों नहीं कर रहे हैं।

विकास कार्य जगन को पसंद नहीं आतेः सांसद कालिसेट्टी अप्पलानायडू

नई दिल्ली, 3 अगस्तः तेलुगु देशम पार्टी (टीडीपी) के विजयनगरम सांसद कालिसेट्टी अप्पलानायडू ने वाईएसआर कांग्रेस पार्टी (वाईएसआरसीपी) के अध्यक्ष वाई.एस. जगन मोहन रेड्डी पर तीखा हमला बोला।

उन्होंने आरोप लगाया कि आंध्र प्रदेश में हो रहे विकास कार्य जगन को पसंद नहीं आते।

सोमवार को नई दिल्ली में मीडिया से बातचीत करते हुए सांसद ने कहा कि जनता के बीच जगन के व्यवहार को लेकर चर्चा हो रही है।

उन्होंने आरोप लगाया कि जगन अपने मीडिया के माध्यम से भोगापुरम अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे को अपनी उपलब्धि बता रहे हैं। उन्होंने यह भी आरोप लगाया कि हवाई अड्डे के उद्घाटन से कुछ घंटे पहले ही जगन ने उत्तर आंध्र का दौरा कर समस्याएँ पैदा करने की कोशिश की।

उन्होंने सवाल किया कि उत्तर आंध्र के दौरे से जगन ने आखिर हासिल क्या किया?

'भोगापुरम हवाई अड्डा समय सीमा से पहले पूरा किया'

अप्पलानायडू ने आरोप लगाया कि वाई.एस. जगन मोहन रेड्डी ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की भोगापुरम यात्रा में भी व्यवधान डालने की कोशिश की।

उन्होंने कहा कि भोगापुरम अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे का उद्घाटन 1 अगस्त को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने किया। उत्तर आंध्र की जनता की ओर से उन्होंने प्रधानमंत्री का आभार व्यक्त किया और कहा कि लगभग तीन लाख लोगों की उपस्थिति में इस हवाई अड्डे को राष्ट्र को समर्पित किया गया।

सांसद ने कहा कि यह परियोजना निर्धारित समय सीमा से पहले ही पूरी कर ली गई।

'उत्तर आंध्र के लिए गेम चेंजर बनेगा भोगापुरम एयरपोर्ट'

अप्पलानायडू ने कहा कि भोगापुरम अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डा उत्तर आंध्र के विकास के लिए एक गेम चेंजर साबित होगा।

उन्होंने कहा कि मुख्यमंत्री

एन. चंद्रबाबू नायडू जनता से किए गए वादों को जिम्मेदारी के साथ पूरा कर रहे हैं और उनके नेतृत्व में उत्तर आंध्र का विकास तेजी से आगे बढ़ रहा है।

सांसद ने दावा किया कि इस हवाई अड्डे के शुरू होने से स्थानीय स्तर पर रोजगार के अवसर बढ़ेंगे और रोजगार के लिए अन्य क्षेत्रों में होने वाला पलायन रुकेगा।

उन्होंने कहा कि एनडीए गठबंधन ने भोगापुरम हवाई अड्डा परियोजना को पूरा कर एक महत्वपूर्ण उपलब्धि हासिल की है।

आधार के जरिए आधिकारिक तौर पर संपत्तियों की हेराफेरी!

तिरुपतिः ये ऐसे कथित धोखाधड़ी के मामले हैं, जिन्होंने आधार की सुरक्षा पर ही गंभीर सवाल खड़े कर दिए हैं। अत्यंत सुरक्षित माने जाने वाले भारतीय विशिष्ट पहचान प्राधिकरण (न्प्क।प्) के डाटाबेस के दुरुपयोग के आरोप सामने आए हैं। ऐसे समय में जब लगभग हर सरकारी प्रक्रिया में आधार को पहचान का प्रमुख प्रमाण माना जाता है, कुछ लोग कथित तौर पर आधार विवरण में हेरफेर कर संपत्तियों का अवैध हस्तांतरण करा रहे हैं।

रिपोर्ट के अनुसार, यह कोई एक घटना नहीं है। आंध्र प्रदेश के कई सब–रजिस्ट्रार कार्यालयों में वास्तविक मालिकों की जानकारी के बिना संपत्तियों का पंजीकरण दूसरे लोगों के नाम पर कर दिया गया। आधार संख्या, नाम, पिता का नाम और बायोमेट्रिक सत्यापन मेल खाने के कारण अधिकारियों को संदेह नहीं हुआ और पंजीकरण की प्रक्रिया पूरी हो गई।

धोखाधड़ी कैसे की जा रही है?

वर्तमान संपत्ति पंजीकरण प्रणाली में आधार प्रमाणीकरण सबसे महत्वपूर्ण चरण है। विक्रेता के अंगूठे का निशान लेने के बाद प्रणाली आधार से जुड़े विवरण प्राप्त करती है। यदि नाम, पिता का नाम और अन्य जानकारी मेल खाती है, तो व्यक्ति को वास्तविक मालिक मानकर पंजीकरण कर दिया जाता है। रिपोर्ट के अनुसार, इसी प्रक्रिया का कथित तौर पर दुरुपयोग किया जा रहा है। धोखेबाज कथित रूप से पुराने संपत्ति दस्तावेज हासिल कर अपने ही आधार रिकॉर्ड में नाम, पिता का नाम और अन्य विवरण उन दस्तावेजों के अनुरूप बदलवा लेते हैं, जबकि आधार संख्या और बायोमेट्रिक उनके अपने ही रहते हैं। ऐसी स्थिति में बायोमेट्रिक सत्यापन सफल हो जाता है क्योंकि अंगूठे का निशान उसी आधार संख्या से मेल खाता है, जबकि स्क्रीन पर दिखाई देने वाले व्यक्तिगत विवरण असली मालिक के होते हैं। इससे अधिकारियों को धोखाधड़ी का संदेह नहीं होता और संपत्ति का पंजीकरण पूरा हो जाता है।

रिपोर्ट में यह भी कहा गया है कि पुराने आधार कार्डों की तस्वीरें अक्सर स्पष्ट नहीं थीं। इसके अलावा पंजीकरण के दौरान फोटोकॉपी का उपयोग और मूल दस्तावेजों की अनिवार्यता न होने के कारण भी कथित धोखाधड़ी आसान हो जाती है।

सुनियोजित तरीके से किया जा रहा है फर्जीवाड़ा

रिपोर्ट के अनुसार, धोखेबाज मुख्य रूप से उन संपत्तियों को निशाना बनाते हैं जिनका पंजीकरण आधार लागू होने से पहले हुआ था, विशेषकर लगभग दो दशक पुराने लेआउट की जमीनें।

वे ऑनलाइन उपलब्ध एन्कम्ब्रेंस सर्टिफिकेट और अन्य रिकॉर्ड प्राप्त कर लंबे समय से बिना किसी लेन–देन वाली संपत्तियों की पहचान करते हैं। इसके बाद दस्तावेजों में दर्ज मालिक की जानकारी के अनुरूप अपने आधार रिकॉर्ड में कथित बदलाव कर संपत्ति बेच देते हैं। अधिकांश मामलों में असली मालिक को इस धोखाधड़ी की जानकारी काफी देर बाद मिलती है।

क्या ऐसा वास्तव में संभव है?

रिपोर्ट यह महत्वपूर्ण प्रश्न उठाती है कि क्या कोई व्यक्ति धोखाधड़ी के उद्देश्य से आधार में अपना नाम और अन्य व्यक्तिगत जानकारी आधिकारिक रूप से बदल सकता है?

सामान्य परिस्थितियों में नाम पूरी तरह बदलने के लिए कानूनी दस्तावेज और सरकारी प्रक्रिया आवश्यक होती है। लेकिन रिपोर्ट के अनुसार, कुछ मामलों में आधार संख्या वही रखते हुए नाम, पता और अन्य विवरण पूरी तरह बदल दिए गए। रिपोर्ट का दावा है कि यह केवल फोटो एडिटिंग का मामला नहीं है, बल्कि बदली हुई जानकारी कथित रूप से न्प्क।प् की वेबसाइट और पंजीकरण विभाग के डाटाबेस में भी दिखाई दे रही है। ऐसा कैसे संभव हुआ, इसका उत्तर अभी स्पष्ट नहीं है। रिपोर्ट के अनुसार इसकी गहन जांच पुलिस और न्प्क।प् अधिकारियों द्वारा की जानी चाहिए।

कौन हैं इसके पीछे?

आधार में कथित हेरफेर कर संपत्ति पंजीकरण कराने के मामलों में कई पुलिस थानों में एफआईआर दर्ज की गई हैं। हालांकि रिपोर्ट के अनुसार इन मामलों की अलग–अलग जांच हो रही है और पूरे नेटवर्क या कथित तौर पर अपनाए जा रहे तरीके की व्यापक जांच अभी तक नहीं हुई है। रिपोर्ट का निष्कर्ष है कि जब आधार लगभग हर सरकारी सेवा का आधार बन चुका है, तब इस प्रकार के आरोप अत्यंत गंभीर हैं और यह पता लगाना आवश्यक है कि क्या इसी तरह की धोखाधड़ी अन्य राज्यों में भी हुई है तथा आधार रिकॉर्ड में कथित बदलाव का उपयोग अन्य प्रकार के अपराधों में भी किया जा रहा है।

किसानों के लिए खुशखबरीः खरीफ फसल बीमा की अंतिम तिथि बढ़ाई गई

अमरावती, 3 अगस्तः आंध्र प्रदेश सरकार ने किसानों को बड़ी राहत देते हुए खरीफ फसल बीमा के पंजीकरण की अंतिम तिथि बढ़ाने की घोषणा की है। सरकार ने बताया कि खरीफ फसल बीमा के पंजीकरण की समय–सीमा को 15 दिन और बढ़ा दिया गया है।

पहले यह अवधि 31 जुलाई को समाप्त होने वाली थी, लेकिन अब अधिक किसानों को लाभ देने के लिए इसे 15 दिनों के लिए बढ़ा दिया गया है। आंध्र प्रदेश सरकार ने कहा कि यह फसल बीमा योजना प्राकृतिक आपदाओं, बाढ़ और सूखे के कारण होने वाले फसल नुकसान से किसानों को वित्तीय सुरक्षा प्रदान करती है। सरकार ने बताया कि किसान केवल ६1 के प्रीमियम पर इस योजना का लाभ उठा सकते हैं।

जिन किसानों ने अभी तक पंजीकरण नहीं कराया है, उनसे जल्द से जल्द बीमा कराने तथा अपनी खेती की हर एकड़ भूमि का बीमा कराने की अपील की गई है।

सरकार के अनुसार, किसान बैंकों, कॉमन सर्विस सेंटर, रैतु सेवा केंद्र या NCIP मोबाइल ऐप के माध्यम से अपना पंजीकरण करा सकते हैं।

संपादकीय

उत्तरांध्र के विकास में नया अध्याय!

उत्तरांध्र के लोगों की दशकों पुरानी प्रतीक्षा को समाप्त करते हुए, ''भोगापुरम'' में निर्मित '''अल्लूरी सीताराम राजू अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे''' को प्रधानमंत्री ''नरेंद्र मोदी'' राष्ट्र को समर्पित करने जा रहे हैं। सामान्यतः हवाई अड्डे परिवहन सुविधाओं को बेहतर बनाते हैं, लेकिन कुछ परियोजनाएँ ऐसी होती हैं जो किसी क्षेत्र की आर्थिक तस्वीर को पूरी तरह बदलने की क्षमता रखती हैं। ''भोगापुरम अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डा'' ऐसी ही एक ऐतिहासिक परियोजना है। बुनियादी ढाँचे का विकास किसी भी क्षेत्र की आर्थिक प्रगति की आधारशिला होता है। सड़कें गाँवों को जोड़ती हैं, रेलवे उद्योगों को गति देता है, बंदरगाह देशों के बीच व्यापार को बढ़ाते हैं, जबकि हवाई अड्डे वैश्विक अवसरों को सीधे क्षेत्र तक पहुँचाते हैं। आज की वैश्विक अर्थव्यवस्था में विश्वस्तरीय विमानन व्यवस्था के बिना विदेशी निवेश, पर्यटन, औद्योगिक निर्यात, रियल एस्टेट और रोजगार के अवसरों का विस्तार संभव नहीं है। इसी सोच के साथ एनडीए गठबंधन सरकार ने ''भोगापुरम हवाई अड्डे'' को अत्याधुनिक सुविधाओं से विकसित किया है। दशकों से ''विशाखापत्तनम'' उत्तरांध्र का आर्थिक और वाणिज्यिक केंद्र रहा है, लेकिन वर्तमान ''विशाखापत्तनम हवाई अड्डा'' पूर्णतः नागरिक हवाई अड्डा नहीं है। इसी कारण कई प्रमुख एयरलाइंस अपनी सेवाएँ अपेक्षित स्तर पर संचालित नहीं कर पा रही थीं। आईटी, फार्मा, चिकित्सा, शिक्षा और पर्यटन के क्षेत्र में वैश्विक पहचान बना रहे विशाखापत्तनम के लिए एक पूर्ण विकसित अंतरराष्ट्रीय नागरिक हवाई अड्डे की आवश्यकता लंबे समय से महसूस की जा रही थी। वर्ष 2014 में ''विशाखापत्तनम'' के निकट ''भोगापुरम'' को ग्रीनफील्ड हवाई अड्डे के लिए उपयुक्त स्थान के रूप में चिन्हित किया गया। फरवरी 2019 में तत्कालीन मुख्यमंत्री ''एन. चंद्रबाबू नायडू'' ने इस परियोजना का शिलान्यास किया। इसे केवल एक हवाई अड्डा नहीं, बल्कि ''एरोसिटी'', विमान रखरखाव केंद्र, पायलट प्रशिक्षण संस्थान और लॉजिस्टिक्स हब के रूप में विकसित करने की योजना बनाई गई। भूमि अधिग्रहण के दौरान अपने घर खोने वाले 390 परिवारों को पुनर्वास एवं पुनर्स्थापन (आर एंड आर) पैकेज के साथ विशेष कॉलोनियाँ भी विकसित की गईं। इसके बाद सत्ता में आई ''वाईएसआर कांग्रेस पार्टी (वाईएसआरसीपी)'' सरकार के दौरान यह परियोजना उपेक्षा का शिकार हो गई। पिछली सरकार ने समझौतों की समीक्षा करते हुए ''जीएमआर'' को आवंटित 2,703 एकड़ भूमि में से 500 एकड़ वापस ले ली, जिससे परियोजना की मूल परिकल्पना प्रभावित हुई। पाँच वर्षों में केवल 26 प्रतिशत कार्य ही पूरा हो पाया। लेकिन वर्ष 2024 में ''एनडीए गठबंधन सरकार'' के सत्ता में आते ही परियोजना ने फिर गति पकड़ ली। मुख्यमंत्री ''एन. चंद्रबाबू नायडू'' ने इस पर विशेष ध्यान दिया, जबकि केंद्रीय नागरिक उड्डयन मंत्री ''किन्जरापु राममोहन नायडू'' ने लगातार जमीनी स्तर पर समीक्षा करते हुए प्रतिदिन लगभग 5,000 श्रमिकों के साथ 24 घंटे कार्य सुनिश्चित कराया। वहीं, उपमुख्यमंत्री ''पवन कल्याण'' ने उत्तरांध्र के समग्र विकास को प्राथमिकता देते हुए इस परियोजना को तय समय से पहले पूरा कराने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। ''जन सेना पार्टी'' शुरू से ही क्षेत्रीय असमानताओं को दूर करने तथा विशेष रूप से उत्तरांध्र और रायलसीमा के आर्थिक विकास की पक्षधर रही है। करीब ''4,700 करोड़ रुपये'' की लागत से 2,700 एकड़ से अधिक क्षेत्र में निर्मित ''भोगापुरम अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डा'' देश के सबसे आधुनिक ग्रीनफील्ड हवाई अड्डों में शामिल है। यहाँ निर्मित ''3.8 किलोमीटर लंबा 'कोड 4ई' रनवे'' बड़े अंतरराष्ट्रीय विमानों की सहज लैंडिंग में सक्षम है। हवाई अड्डे में 40 चेक–इन काउंटर और 200 यात्री सेवा काउंटर बनाए गए हैं तथा प्रारंभिक चरण में प्रतिवर्ष 60 लाख यात्रियों की क्षमता विकसित की गई है। आधुनिक ड्रेनेज प्रणाली के कारण इसे प्राकृतिक आपदाओं का सामना करने योग्य उच्च मानकों के अनुरूप तैयार किया गया है। भोगापुरम को केंद्र बनाकर एक समग्र ''एविएशन इकोसिस्टम'' विकसित किया जा रहा है। हवाई अड्डे के आसपास ''एरोसिटी'', लॉजिस्टिक्स पार्क, कार्गो टर्मिनल, होटल, कन्वेंशन सेंटर और व्यावसायिक परिसरों का विकास होगा। इससे उत्तरांध्र के फार्मा, सी–फूड, फल, फूल और वस्त्र उद्योगों के निर्यात को नई गति मिलेगी तथा युवाओं के लिए प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से बड़े पैमाने पर रोजगार के अवसर पैदा होंगे। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में देश में चल रही बुनियादी ढाँचा क्रांति का भोगापुरम परियोजना एक उत्कृष्ट उदाहरण है। राष्ट्रीय राजमार्गों, रेलवे, बंदरगाहों और हवाई अड्डों के समन्वित विकास के माध्यम से भारत को आर्थिक रूप से सशक्त बनाने की दिशा में यह एक और ऐतिहासिक उपलब्धि है। आंध्र प्रदेश के लोगों के लिए भोगापुरम केवल बेहतर कनेक्टिविटी का माध्यम नहीं, बल्कि आत्मविश्वास, नए अवसरों और ऊँचे सपनों का प्रतीक है। यह पूरी दुनिया को यह मजबूत संदेश देता है कि ''उत्तरांध्र'' वैश्विक निवेश और औद्योगिक नवाचार के लिए पूरी तरह तैयार है।

भारतीय बहुलतावाद ही तानाशाही से रक्षा है!

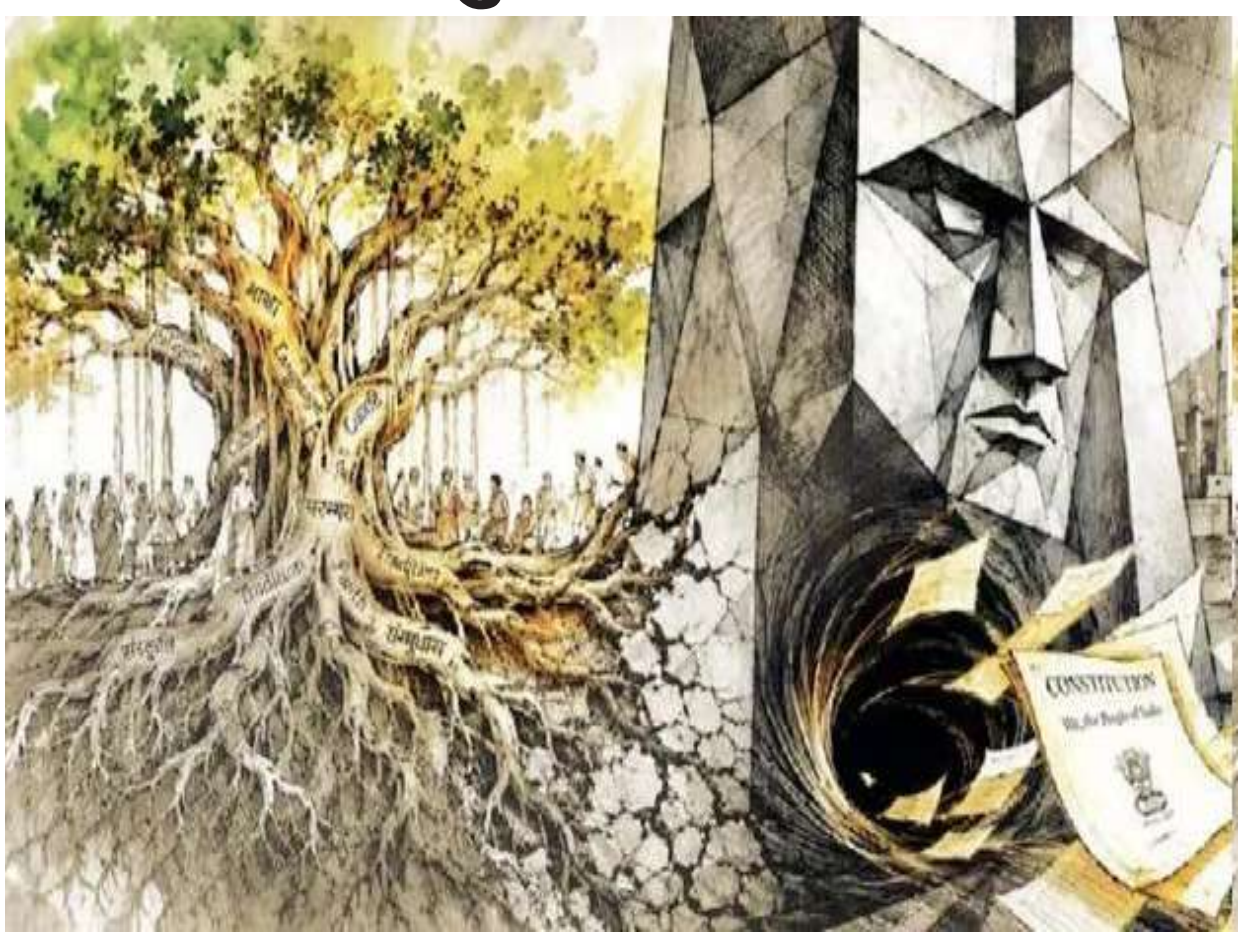

राष्ट्र–राज्य की अवधारणा के भीतर ही तानाशाही के बीज अंतर्निहित होते हैं। किंतु भारत में सदियों से विकसित स्थानीय परंपरागत बहुलतावाद ने इस तानाशाही को एक विशाल वृक्ष बनने से रोक रखा है।

रुरु भारतीय बहुलतावाद ही तानाशाही से रक्षा है!

आज का हिंदुत्व विचार भारतीय भक्ति परंपरा के सहज बहुलतावाद और स्वतंत्रता को मिटाने का प्रयास कर रहा है। यह पश्चिमी धर्मों की ''प्रभु'' की अवधारणा को अपनाकर एक सर्वाधिकारवादी शासक, एक तानाशाह की पूजा करने वाली संस्कृति को हिंदू समाज में स्थापित कर रहा है। यह प्रक्रिया ईश्वर को भी एक राजनीतिक शासक और सत्ता के केंद्र में बदलने की दिशा में ले जाती है। देवानांप्रिय अपने साम्राज्य में रहने वाली वनवासी जनजातियों (आदिवासियों) को एक ओर समझा रहे हैं, वहीं दूसरी ओर अपने पास मौजूद दंड देने की शक्ति का भी उन्हें स्मरण करा रहे हैं। राष्ट्र–राज्य की स्थापना में ही तानाशाही के बीज निहित हैं। किंतु भारत में सदियों से विकसित स्थानीय बहुलतावादी परंपरा ने इसे निरंकुश सत्ता में बदलने से रोके रखा। ''रवीन्द्रनाथ ठाकुर ने स्वतंत्रता आंदोलन के समय ही चेतावनी दी थी कि राष्ट्रवाद और राष्ट्र–राज्य अंततः केंद्रीकृत तानाशाही की ओर ले जा सकते हैं। ''महात्मा गांधी'' ने भी इस खतरे को समझते हुए राष्ट्रवाद को भारतीय बहुलतावाद के साथ जोड़ने का प्रयास किया।

भारतीय संविधान नागरिकों को जीवन का अधिकार, अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता जैसे मौलिक अधिकार प्रदान करता है। किंतु जिस प्रकार राष्ट्र–राज्य के लिए भौगोलिक सीमाएँ महत्वपूर्ण हैं, उसी प्रकार नागरिक अधिकारों पर राज्य के नियंत्रण की भी एक सीमा निर्धारित की गई। इस सीमा का नाम है ''प्रिवेंटिव डिटेंशन लॉ अर्थात ''निरोधात्मक निरुद्धि कानून''।

जैसे भौतिकी में ''ब्लैक होल'' के भीतर सामान्य नियम निष्प्रभावी हो जाते हैं, उसी प्रकार प्रिवेंटिव डिटेंशन के दायरे में आने के बाद नागरिकों को संविधान द्वारा प्रदत्त अधिकांश मौलिक अधिकार व्यावहारिक रूप से समाप्त हो जाते हैं।

सामान्य कानूनों के अंतर्गत गिरफ्तारी के समय जो न्यूनतम कानूनी सुरक्षा प्राप्त होती है, वह भी यहाँ उपलब्ध नहीं रहती। संविधान के इन्हीं प्रावधानों से आगे चलकर ''यूएपीए जैसे कठोर कानून अस्तित्व में आए।

न्यायपालिका और सरकारों द्वारा मिलकर नागरिक अधिकारों का हनन करना भारत के इतिहास में कोई नई बात नहीं है। किंतु आज हिंदुत्व विचारधारा और हिंदू राष्ट्रवाद ने ऐसे कठोर कानूनों तथा राज्य हिंसा के लिए समाज के भीतर से ही व्यापक ''सहमति'' (ब्वदेमदज) का वातावरण तैयार कर दिया है। वास्तविक खतरा यही है।

''डॉ. भीमराव आंबेडकर'', ''जवाहरलाल नेहरू'' सहित आधुनिक भारत के निर्माताओं ने केंद्रीकृत राज्य को सामंती व्यवस्था, जातिगत संकीर्णता और सामाजिक पिछड़ेपन से मुक्ति का माध्यम माना। इसी कारण उन्होंने राज्य को मजबूत बनाने का समर्थन किया। उनका विश्वास था कि यदि देश की एकता और अखंडता के लिए आवश्यक हो तो कुछ परिस्थितियों में नागरिक अधिकारों पर भी सीमाएँ लगाई जा सकती हैं। इसी सोच के कारण संविधान में निरोधात्मक कानूनों के लिए स्थान बना। इसके परिणामस्वरूप विभिन्न सरकारों ने अनेक अवसरों पर गरीबों और अल्पसंख्यकों के साथ भेदभावपूर्ण व्यवहार किया है। इस ओर बुद्धिजीवियों और पत्रकारों ने लगातार ध्यान आकर्षित किया है। पहले राज्य स्वयं अधिकारों का दमन करता था, किंतु अब समाज के भीतर ही ऐसे दमन का समर्थन करने वाली मानसिकता विकसित हो रही है। भारत की आत्मा उसकी विविधता में निहित है। भारतीय भक्ति परंपरा में ईश्वर को कभी सर्वाधिकारवादी शासक नहीं माना गया। यहाँ ईश्वर मित्र (सखा), प्रियतम, संतान अथवा संवाद करने योग्य साथी के रूप में दिखाई देते हैं। ईश्वर और भक्त का संबंध स्वतंत्रता और आत्मीयता पर आधारित है। इसके विपरीत पश्चिमी ''प्रोटेस्टेंट अथवा ''अब्राहमिक धार्मिक परंपराओं में ''प्रभु'' की अवधारणा प्रमुख है, जहाँ ईश्वर सर्वशक्तिमान शासक हैं जिनकी आज्ञा का पालन करना अनिवार्य माना जाता है।दार्शनिक ''एरिक फ्रॉम का कहना था कि जो लोग स्वतंत्रता का भार सहन नहीं कर पाते, वे तानाशाह की शरण लेने लगते हैं। आज हिंदुत्व विचारधारा भारतीय भक्ति परंपरा के इसी बहुलतावादी और स्वतंत्र स्वरूप को समाप्त कर रही है। यह पश्चिमी धार्मिक अवधारणाओं से ''प्रभु'' की छवि लेकर हिंदू समाज में एक सर्वशक्तिमान शासक की पूजा का भाव स्थापित कर रही है। परिणामस्वरूप स्वतंत्रता आंदोलन के समय प्रचलित ''सभी धर्मों और संस्कृतियों का समन्वय'' जैसी भावना उपहास का विषय बनती जा रही है। उसके स्थान पर ''एक कानून, एक धर्म, एक संस्कृति, एक राष्ट्र'' जैसी ''एकाश्म सोच को बढ़ावा मिल रहा है।

राज्य के अत्यधिक केंद्रीकरण से नागरिक अधिकार कैसे कमजोर होते हैं, इसका उदाहरण भारत का प्राचीन राजनीतिक इतिहास भी देता है। ''मौर्य साम्राज्य'' एक शक्तिशाली केंद्रीकृत साम्राज्य था। उस समय ''कौटिल्य'' के ''अर्थशास्त्र'' में राज्य की सुरक्षा को सर्वोच्च महत्व दिया गया। वहाँ धर्म से अधिक राज्यसत्ता को प्राथमिकता दी गई। यहाँ तक कि यदि कोई ब्राह्मण भी राजद्रोह करता था तो उसे मृत्युदंड दिया जा सकता था। सामान्य नागरिक की स्थिति इससे भी अधिक कठिन थी। इस व्यवस्था में नागरिक से अधिक महत्व साम्राज्य की सुरक्षा को प्राप्त था, इसलिए ''मत्स्य न्याय'' अर्थात शक्तिशाली के शासन की अवधारणा अप्रत्यक्ष रूप से स्वीकार की गई। मौर्य साम्राज्य के पतन के बाद विकसित ग्रामीण समाजों और छोटे राज्यों की पृष्ठभूमि में रचित ''धर्मशास्त्र'' तथा ''मनुस्मृति'' ने भिन्न दृष्टिकोण प्रस्तुत किया। यद्यपि इन ग्रंथों में जातिगत असमानताएँ स्पष्ट थीं, फिर भी उन्होंने केंद्रीकृत राज्यसत्ता की निरंकुशता का समर्थन नहीं किया। उन्होंने स्पष्ट कहा कि ''राजा से भी बड़ा धर्म है।'' इन ग्रंथों में आर्थिक अपराधों के मामलों में समाज के उच्च वर्गोंकृविशेषकर ब्राह्मण और क्षत्रियकृपर अधिक कठोर दंड का प्रावधान था, क्योंकि उनसे अधिक नैतिक उत्तरदायित्व की अपेक्षा की जाती थी। ''मनु'' का मत था कि शिक्षित और प्रभावशाली वर्गों द्वारा किए गए अपराध अधिक गंभीर हैं, इसलिए उन्हें अधिक दंड मिलना चाहिए। आज की स्थिति इससे बिल्कुल विपरीत दिखाई देती है। इतिहास यह बताता है कि विशाल केंद्रीकृत साम्राज्यों के दौर में राज्य सुरक्षा के नाम पर नागरिक अधिकारों का सबसे अधिक हनन हुआ। आधुनिक केंद्रीकृत राष्ट्र–राज्य में भी यही प्रवृत्ति दिखाई देती है। समान नागरिक संहिता के नाम पर आदिवासियों और अल्पसंख्यकों के विशेष अधिकारों के समाप्त होने तथा एक समान संस्कृति थोपे जाने की आशंकाएँ व्यक्त की जा रही हैं।

आज के वैश्विक मेगा–सभ्यताओं के युग में राष्ट्र–राज्य के नाम पर निर्दोष लोगों का बलिदान विकास और राष्ट्रभक्ति के नाम पर स्वीकार्य बनाया जा रहा है। धर्म और संस्कृति जैसे शब्द इस प्रक्रिया को सामाजिक स्वीकृति प्रदान कर रहे हैं।

आज केंद्रीकृत राज्य और पूँजीवाद के बीच गहरा संबंध बन चुका है। 17वीं शताब्दी के विद्वान ''नीलकंठ दीक्षित (छममसांदजं क्पोपजं)'' ने अपनी कृति ''कलिविडम्बनम् में आध्यात्मिकता और ईश्वर के भी व्यापार का विषय बन जाने तथा धन की बढ़ती प्रधानता पर चिंता व्यक्त की थी। वह समय भारत में यूरोपीय व्यापारिक संस्कृति के प्रवेश का प्रारंभिक दौर था।

आज ''आशीष नंदी के शब्दों में भारत अमेरिका का एक ''सांस्कृतिक झुग्गी–झोपड़ी'' (ब्नसजनतंस ैसनउ) बनता जा रहा है। हमारा राष्ट्र–राज्य और हमारी संस्कृति धीरे–धीरे पश्चिमी प्रोटेस्टेंट ईसाई सत्ता–केंद्रित संरचना की नकल बनते जा रहे हैं।

संविधान सभा में स्वतंत्रता सेनानी ''महावीर त्यागी'' ने निरोधात्मक कानूनों के माध्यम से राष्ट्र–राज्य के तानाशाही स्वरूप को लेकर जो आशंकाएँ व्यक्त की थीं, वे आज सच होती दिखाई दे रही हैं। आज आवश्यकता इस बात की है कि ''मनुस्मृति'' में निहित सामाजिक असमानताओं को पीछे छोड़ते हुए भारत की मूल आत्माकृउसके बहुलतावादकृको केंद्रीकृत राज्य की तानाशाही से सुरक्षित रखा जाए। यही वर्तमान समय का सबसे महत्वपूर्ण मार्ग है।

कीचक बन चुके रक्षकों को मिले दोगुनी सजा...

समाज को अपराधमुक्त बनाए रखने और अपराध करने वालों को कानून के दायरे में लाकर न्यायालय के समक्ष प्रस्तुत करने की जिम्मेदारी पुलिस की होती है। लेकिन जब रक्षक ही भक्षक बन जाएँ? जब कानून की रक्षा करने वाले पुलिसकर्मी ही महिलाओं के साथ अत्याचार और अपराध करें, तो क्या उन्हें सामान्य अपराधियों जैसी सजा पर्याप्त होगी? बिल्कुल नहीं। ऐसे मामलों में कानून में संशोधन कर पुलिसकर्मियों को सामान्य अपराधियों की तुलना में दोगुनी सजा देने का प्रावधान किया जाना चाहिए।

हाल ही में सामने आया प्रशिक्षु आईपीएस अधिकारी ''उदय कृष्णा रेड्डी'' का मामला पूरे समाज को झकझोर देने वाला है। आरोप है कि उदय कृष्णा रेड्डी ने प्रेम के नाम पर अपनी सह–प्रशिक्षु महिला अधिकारी को मानसिक और शारीरिक रूप से प्रताड़ित किया। उसने महिला का लैपटॉप फेंक दिया, बाल पकड़कर कमरे में घसीटा, गले पर चाकू रखकर जान से मारने की धमकी दी और उसकी जानकारी के बिना बनाए गए वीडियो उसके परिवार को भेज दिए। इतना ही नहीं, पुलिस के रिमांड रिपोर्ट के अनुसार उसने पुलिस अकादमी में प्रशिक्षण ले रही अन्य महिला आईपीएस अधिकारियों और अपने पैतृक गाँव की कुछ युवतियों का भी यौन उत्पीड़न किया। कानून की अच्छी जानकारी होने के कारण उसने गिरफ्तारी से बचने के लिए हाईकोर्ट में क्वैश याचिका भी दायर की। यदि महिलाओं के साथ इस प्रकार के गंभीर अपराध करने वाला व्यक्ति आईपीएस अधिकारी बन जाता है, तो यह आशंका स्वाभाविक है कि वह पीड़ितों को न्याय दिलाने के बजाय आरोपियों का संरक्षण करेगा।

हाल ही में एक सर्किल इंस्पेक्टर (सीआई) पर भी आरोप लगे कि उसने शिकायत दर्ज कराने आई एक महिला से परिचय बढ़ाया और बाद में उसके साथ कई बार दुष्कर्म

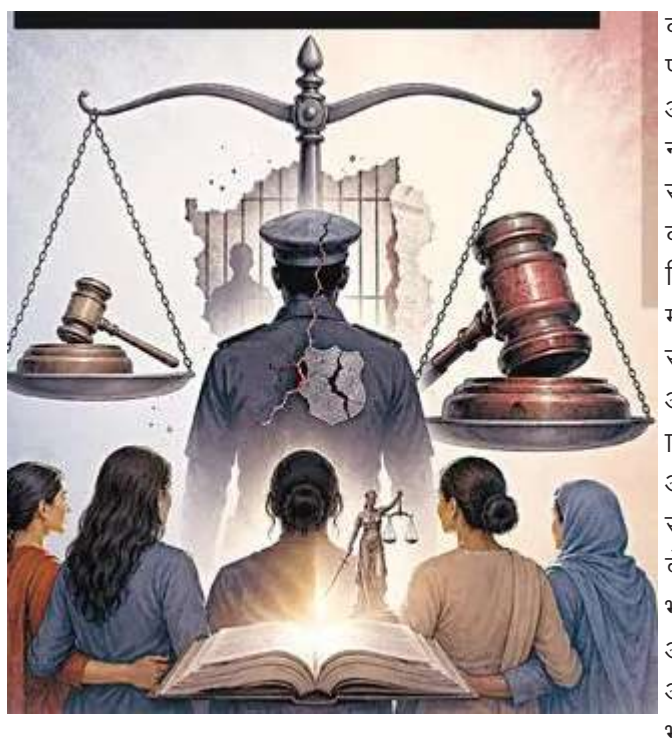

किया। पीड़िता ने यह भी आरोप लगाया कि आरोपी ने उससे जबरन दो करोड़ रुपये वसूले। देश के अन्य राज्यों की स्थिति भी अलग नहीं है। हाल ही में उत्तर प्रदेश में ''अभिषेक यादव'' नामक एक कांस्टेबल पर दस वर्षीय बच्ची का अपहरण, उसके साथ दुष्कर्म और फिर हत्या करने का आरोप लगा। बाद में बच्ची का शव एक कुएँ से बरामद हुआ।

वर्ष 2023 में संयुक्त तेलुगु राज्यों में महिलाओं के खिलाफ दर्ज अपराधों में एक उल्लेखनीय हिस्सा पुलिसकर्मियों द्वारा किए गए अपराधों का था।

हालांकि, पुलिसकर्मियों के खिलाफ शिकायत दर्ज कराने से अधिकांश महिलाएँ डरती हैं। कई पीड़िताएँ भय के कारण सामने नहीं आतीं, जबकि अनेक मामलों में दबाव के चलते शिकायतें दर्ज ही नहीं हो पातीं। इसलिए पुलिसकर्मियों द्वारा किए गए सभी अपराध कभी सामने नहीं आ पाते। महिलाओं के प्रति समाज में व्याप्त भेदभावपूर्ण दृष्टिकोण और पितृसत्तात्मक मानसिकता के कारण कुछ लोग महिलाओं के विरुद्ध अपराध को अपना अधिकार समझने लगते हैं।

अनेक पुलिसकर्मी महिलाओं के साथ अनैतिक संबंध बनाने, अनुचित व्यवहार करने और दुष्कर्म जैसे अपराधों में लिप्त पाए जा रहे हैं। वे निजी वीडियो सार्वजनिक करने या परिवार को भेजने की धमकी देकर पीड़िताओं से धन उगाही भी करते हैं। ऐसे भटक चुके पुलिसकर्मियों के खिलाफ केवल औपचारिक विभागीय कार्रवाई पर्याप्त नहीं है। आपराधिक प्रवृत्ति वाले लोगों की पुलिस सेवा में भर्ती ही नहीं होनी चाहिए। यदि कोई पुलिसकर्मी अपराध करता है तो उसे तत्काल सेवा से निलंबित या बर्खास्त किया जाना चाहिए। साथ ही, पुलिस प्रशिक्षण के दौरान ''जेंडर सेंसिटिविटी प्रशिक्षण'' को अनिवार्य बनाया जाना चाहिए, ताकि महिलाओं के प्रति सम्मान और संवेदनशीलता की भावना विकसित हो सके।

सचिवालय सेवाओं में लापरवाही बर्दाश्त नहीं: कलेक्टर

काकीनाडा, 3 अगस्त (पेन पावर): जिला कलेक्टर एम.एन. हरेंद्र प्रसाद ने अधिकारियों को निर्देश दिया कि ग्राम एवं वार्ड सचिवालयों के माध्यम से नागरिकों को पारदर्शी, समयबद्ध और प्रभावी सेवाएं प्रदान की जाएं। सोमवार को आयोजित समीक्षा बैठक में उन्होंने कहा कि सरकारी योजनाओं और विकास कार्यक्रमों के लक्ष्यों की प्राप्ति में किसी भी प्रकार की लापरवाही बर्दाश्त नहीं की जाएगी। उन्होंने 'तल्लिकी वंदनम' की लंबित अर्जियों के शीघ्र निस्तारण, मी–सेवा, ई–केवाईसी, आधार पंजीकरण, अक्षरांध्र, स्वच्छता, रोजगार तथा जल जीवन मिशन से जुड़े कार्यों में तेजी लाने के निर्देश दिए। साथ ही, निर्धारित समय सीमा में सभी लक्ष्यों को पूरा करने में विफल रहने वाले अधिकारियों के खिलाफ कड़ी कार्रवाई की चेतावनी दी।

आदित्य यूनिवर्सिटी में पाँच दिवसीय IoT एवं AI कार्यशाला शुरू

गंडेपल्ली, 3 अगस्त (पेन पावर): आदित्य यूनिवर्सिटी के आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस एंड मशीन लर्निंग (AI & ML) विभाग द्वारा "बिल्ड स्मार्ट सॉल्यूशंसः IoT & AI विद ESP32 विषय पर पाँच दिवसीय प्रायोगिक कार्यशाला का शुभारंभ किया गया। 3 से 7 अगस्त तक चलने वाली इस कार्यशाला में छात्रों को IoT, AI, ESP32 प्रोग्रामिंग, सेंसर इंटीग्रेशन, क्लाउड आधारित डेटा संचार और स्मार्ट एप्लिकेशन विकास का व्यावहारिक प्रशिक्षण दिया जाएगा। विश्वविद्यालय के अधिकारियों ने कहा कि यह कार्यशाला छात्रों के तकनीकी कौशल, नवाचार क्षमता और उद्योग के लिए उनकी तैयारी को मजबूत करेगी।

पूर्वी गोदावरी में पीजीआरएस और राजस्व क्लिनिक में 219 शिकायतें प्राप्त

राजमहेंद्रवरम, 3 अगस्त (पेन पावर): पूर्वी गोदावरी जिला कलेक्टर कीर्ति चेकूरी ने अधिकारियों को निर्देश दिया कि पब्लिक ग्रीवेंस रिड्रेसल सिस्टम और राजस्व क्लिनिक में प्राप्त सभी शिकायतों का निर्धारित समय सीमा के भीतर जिम्मेदारी के साथ निस्तारण किया जाए। सोमवार को आयोजित कार्यक्रम में विभिन्न विभागों से संबंधित 219 शिकायतें प्राप्त हुईं। इसी दिन जिला पुलिस कार्यालय में आयोजित पुलिस पीजीआरएस कार्यक्रम के दौरान जिला पुलिस अधीक्षक डी. नरसिंह किशोर ने 32 शिकायतें प्राप्त कीं और संबंधित अधिकारियों को कानूनी दायरे में रहते हुए त्वरित कार्रवाई कर शिकायतकर्ताओं को शीघ्र न्याय दिलाने के निर्देश दिए।

विशाखापट्टनम के सात किसान बाजारों में चावल बिक्री केंद्र शुरू

विशाखापट्टनम, 3 अगस्त (पेन पावर): जिला प्रभारी कलेक्टर गोब्बिल्ला विद्याधरी ने बताया कि आम लोगों को रियायती दरों पर गुणवत्तापूर्ण चावल उपलब्ध कराने के लिए जिले के सात किसान बाजारों में विशेष चावल बिक्री केंद्र शुरू किए गए हैं। राज्य सरकार की इस योजना के तहत सफेद राशन कार्डधारक परिवार मुफ्त चावल के अतिरिक्त प्रति माह 10 किलोग्राम चावल बाजार मूल्य से कम कीमत पर खरीद सकेंगे। इस पहल का उद्देश्य लोगों पर खाद्यान्न की कीमतों का बोझ कम करना और गुणवत्तापूर्ण चावल सुलभ कराना है।

फसल बीमा पंजीकरण की अंतिम तिथि 15 अगस्त तक बढ़ी

गुंटूर, 3 अगस्त (पेन पावर): गुंटूर जिला कलेक्टर सी.एम. साईकांत वर्मा ने बताया कि किसानों के हित में फसल बीमा पंजीकरण की अंतिम तिथि 15 अगस्त तक बढ़ा दी गई है। उन्होंने अधिकारियों को निर्देश दिया कि सभी पात्र किसानों को फसल बीमा से जोड़ने के लिए व्यापक जागरूकता अभियान चलाया जाए।

समीक्षा बैठक में कलेक्टर ने एल–नीनो के कारण संभावित जल संकट को देखते हुए किसानों को वैकल्पिक फसलों और प्राकृतिक खेती अपनाने के लिए प्रेरित करने को कहा। उन्होंने काश्तकार किसानों को सीसीआर कार्ड जारी करने, लंबित भूमि मामलों का शीघ्र निपटारा करने तथा 'तल्लिकी वंदनम' योजना के आवेदनों का समयबद्ध समाधान सुनिश्चित करने के भी निर्देश दिए।

बाढ़ के बाद पुनर्वास कार्यों में तेजी : कलेक्टर दिनेश कुमार

रम्पचोडवरम, 3 अगस्त (पेन पावर): अल्लूरी सीताराम राजू जिला कलेक्टर के. दिनेश कुमार ने कहा कि बाढ़ का पानी घटने के साथ ही पुनर्वास एवं बहाली कार्यों में तेजी लाई जा रही है। उन्होंने बताया कि 118 राहत शिविरों में 2,200 लोगों को आश्रय, भोजन और चिकित्सा सुविधाएं उपलब्ध कराई जा रही हैं, जबकि 12,400 बाढ़ प्रभावित परिवारों को आवश्यक राशन वितरित किया जा रहा है।

कलेक्टर ने अधिकारियों को सड़कों की मरम्मत, बिजली आपूर्ति बहाल करने, व्यापक स्वच्छता अभियान चलाने तथा घर–घर स्वास्थ्य सर्वे कर मलेरिया, डेंगू और अन्य जलजनित बीमारियों की रोकथाम सुनिश्चित करने के निर्देश दिए। उन्होंने भरोसा दिलाया कि सभी पुनर्वास कार्य पूरे होने तक जिला प्रशासन प्रभावित क्षेत्रों में ही रहेगा।

सूंकरामेट्टा पीएचसी में डिजिटल स्वास्थ्य सेवाओं की शुरुआत

पाडेरू, 3 अगस्त (पेन पावर): अल्लूरी सीताराम राजू जिला कलेक्टर टी. निशांति ने बताया कि दूरदराज के आदिवासी क्षेत्रों में आधुनिक स्वास्थ्य सेवाएं उपलब्ध कराने के लिए सूंकरामेट्टा प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र को टाटा संजीवनी डिजिटल नर्व सेंटर के पायलट प्रोजेक्ट के लिए चुना गया है।

इस परियोजना के तहत डिजिटल स्वास्थ्य रिकॉर्ड, विशेषज्ञ डॉक्टरों से टेली–परामर्श, ऑनलाइन अपॉइंटमेंट, डायग्नोस्टिक रेफरल तथा सरकारी स्वास्थ्य योजनाओं की जानकारी जैसी सेवाएं उपलब्ध होंगी। लोग 155337 टोल–फ्री नंबर या 'संजीवनी सिटिजन' ऐप के माध्यम से निःशुल्क सेवाओं का लाभ उठा सकेंगे। दौरे के दौरान कलेक्टर ने विश्व स्तनपान सप्ताह जागरूकता कार्यक्रम का भी शुभारंभ किया।

80वें स्वतंत्रता दिवस समारोह देशभक्ति की भावना के साथ आयोजित हों : कलेक्टर

राजमहेंद्रवरम, 3 अगस्त (पेन पावर): पूर्वी गोदावरी जिला कलेक्टर कीर्ति चेकूरी ने अधिकारियों को निर्देश दिया कि 15 अगस्त को आयोजित होने वाले 80वें स्वतंत्रता दिवस समारोह देशभक्ति और राष्ट्रीय गौरव की भावना के साथ आयोजित किए जाएं। समीक्षा बैठक में उन्होंने परेड, छात्र–छात्राओं के सांस्कृतिक कार्यक्रम, विभागीय झांकियां, प्रदर्शनी स्टॉल तथा उत्कृष्ट सेवा देने वाले अधिकारियों और कर्मचारियों के सम्मान सहित सभी तैयारियां समय पर पूरी करने के निर्देश दिए। समारोह सरकारी आर्ट्स कॉलेज मैदान में आयोजित होगा, जिसमें राज्य सरकार द्वारा नामित मंत्री मुख्य अतिथि के रूप में शामिल होंगे।

शिकायतों के निस्तारण में देरी बर्दाश्त नहीं : कलेक्टर

ओंगोल, 3 अगस्त (पेन पावर): प्रकाशम जिला कलेक्टर पी. राजाबाबू ने अधिकारियों को चेतावनी दी कि शिकायतों को लंबे समय तक ''इन प्रोग्रेस'' दिखाकर लंबित रखना स्वीकार नहीं किया जाएगा। उन्होंने निर्देश दिया कि सभी लंबित शिकायतों का निर्धारित समय सीमा के भीतर गुणवत्तापूर्ण और स्थायी समाधान सुनिश्चित किया जाए। सोमवार को आयोजित 'मी कोसम' जन शिकायत कार्यक्रम में 332 शिकायतें प्राप्त हुईं। कलेक्टर ने बताया कि 15 अगस्त के बाद सरकार विभिन्न कल्याणकारी योजनाओं पर जनता से सीधे फीडबैक लेगी और शिकायतों के निस्तारण में किसी भी प्रकार की लापरवाही बर्दाश्त नहीं की जाएगी।

पूर्वी गोदावरी में 41 स्थानों पर चावल बिक्री केंद्र शुरू

राजमहेंद्रवरम, 3 अगस्त (पेन पावर): पूर्वी गोदावरी की संयुक्त कलेक्टर वाई. मेघा स्वरूप ने बताया कि सरकार की चावल मूल्य स्थिरीकरण योजना के तहत जिले में 41 चावल बिक्री केंद्र शुरू किए गए हैं। इन केंद्रों पर आरएनआर, एचएमटी और अन्य किस्मों का चावल 52 प्रति किलोग्राम तथा बीपीटी (रॉ राइस) 50 प्रति किलोग्राम की दर से उपलब्ध कराया जा रहा है। प्रत्येक राशन कार्डधारक परिवार आधार प्रमाणीकरण के माध्यम से प्रति माह 26 किलोग्राम तक चावल खरीद सकता है। यह सुविधा जिले के 8 किसान बाजारों और 33 राइस मिल आउटलेट्स पर उपलब्ध है।

शिशु के लिए मां का दूध अमृत समान : एनटीआर कलेक्टर

विजयवाड़ा, 3 अगस्त (पेन पावर): एनटीआर जिला कलेक्टर डॉ. जी. लक्ष्मीशा ने कहा कि मां का दूध शिशु के लिए सर्वोत्तम पोषण है और यह उसके स्वस्थ विकास, रोग प्रतिरोधक क्षमता तथा मानसिक वृद्धि के लिए अत्यंत आवश्यक है।

उन्होंने माताओं से जन्म के पहले घंटे के भीतर स्तनपान शुरू करने तथा पहले छह महीनों तक केवल मां का दूध पिलाने की अपील की। विश्व स्तनपान सप्ताह (1–7 अगस्त) के अवसर पर कलेक्टर ने कलेक्ट्रेट में पोस्टर और वॉल मैगजीन का उद्घाटन किया तथा स्वास्थ्य कर्मियों को स्तनपान के महत्व के प्रति व्यापक जनजागरूकता फैलाने के निर्देश दिए।

दीपिका की मां बनने की तैयारी, लेकिन काम से समझौता नहीं

प्रैग्नेंसी के दौरान दीपिका का अपने काम के प्रति समर्पण दिखाता है कि मातृत्व और करियर दोनों को साथ लेकर आगे बढ़ना संभव है। मातृत्व किसी भी महिला की जिंदगी का सबसे खूबसूरत और चुनौतीपूर्ण दौर माना जाता है लेकिन जब दीपिका पादुकोण की हो, तो यह सफर सिर्फ निजी जिंदगी तक सीमित नहीं रहता । वह इन दिनों अपनी दूसरी प्रैग्नेंसी के सातवें महीने में है, फिर भी प्रोफैशनल कमिटमेंट्स को उसी जुनून के साथ निभा रही है, जिसके लिए उसे जाना जाता है। एक तरफ वह अपनी आने वाली फिल्म 'राका' के चुनौतीपूर्ण एक्शन सीक्वेंस शूट कर रही है, तो दूसरी ओर सोशल मीडिया पर अपनी प्रैग्नैंसी जर्नी के छोटे-छोटे अनुभव भी प्रशंसकों के साथ साझा कर रही है। यही वजह है कि इन दिनों दीपिका सिर्फ अपनी फिल्मों के लिए नहीं, बल्कि अपने समर्पण और संतुलित सोच के लिए भी चर्चा में है ।

सात महीने की प्रैग्नेंसी में भी जारी है एक्शन

बॉलीवुड में लंबे समय तक यह धारणा रही कि प्रेग्नेंसी के दौरान अभिनेत्रियां काम से दूरी बना लेती हैं। हालांकि, बदलते दौर में यह सोच तेजी से बदल रही है और दीपिका पादुकोण इसका ताजा उदाहरण है।

हालिया रिपोर्ट्स के अनुसार दीपिका अपनी बहुप्रतीक्षित फिल्म 'राका' की शूटिंग लगातार कर रही है । सबसे खास बात यह है कि वह प्रैग्नेंसी के सातवें महीने में होने के बावजूद फिल्म के कई चुनौतीपूर्ण एक्शन सीक्वेंस भी शूट कर चुकी है। बताया जा रहा है कि मातृत्व अवकाश पर जाने से पहले वह फिल्म का अपना हिस्सा समय पर पूरा करना चाहती है।

हालांकि, दीपिका लंबे समय से फिल्म इंडस्ट्री में आठ घंटे की वर्क शिफ्ट और बेहतर वर्क-लाइफ बैलेंस की समर्थक रही है, लेकिन अपनी प्रोफैशनल जिम्मेदारियों को लेकर उसका समर्पण भी उतना ही मजबूत है।

टीम बोली- प्रेरणा है दीपिका

फिल्म से जुड़े सूत्रों के अनुसार, 'राका' की टीम दीपिका की कार्यशैली से बेहद प्रभावित है। यूनिट के सदस्यों का कहना है कि कुछ एक्शन दृश्य शारीरिक रूप से बेहद चुनौतीपूर्ण थे, लेकिन दीपिका ने पूरी तैयारी और सकारात्मक सोच के साथ उन्हें पूरा किया। टीम का यह भी कहना है कि शूटिंग के बाद दीपिका अपनी डेढ़ साल की बेटी दुआ के साथ भी पूरा समय बिताती है। काम और परिवार के बीच उसका संतुलन सैट पर मौजूद हर व्यक्ति के लिए प्रेरणा का विषय बना हुआ है ।

'राका' से जुड़ी बड़ी उम्मीदें

निर्देशक एटली की महत्वाकांक्षी साइंस फिक्शन फैंटेसी एक्शन फिल्म 'राका' पहले से ही चर्चा में है । फिल्म में दीपिका पादुकोण पहली बार सुपरस्टार अल्लू अर्जुन के साथ स्क्रीन साझा करती नजर आएगी। बड़े पैमाने पर तैयार की जा रही इस पैन इंडिया फिल्म में हाई-ऑक्टेन एक्शन, अत्याधुनिक विजुअल इफैक्ट्स और भव्य सिनेमाई अनुभव देखने को मिलेगा। फिल्म को वर्ष 2027 की सबसे बहुप्रतीक्षित रिलीज में शामिल माना जा रहा है।

प्रैग्नेंसी की चुनौतियां भी

दीपिका उन अभिनेत्रियों में शामिल है, जो अपनी निजी जिंदगी को जरूरत से ज्यादा सार्वजनिक नहीं करती। बावजूद इसके उसने हाल ही में सोशल मीडिया पर अपनी प्रैग्नेंसी से जुड़ा एक हल्का-फुल्का अनुभव साझा किया। उसने इंस्टाग्राम स्टोरी पर एक रील शेयर की, जिसमें तीसरी तिमाही में गर्भवती महिला को धीरे-धीरे चलते हुए दिखाया गया था । इसके साथ लगाया गया उसका उल्टा स्माइली इमोजी यह बताने के लिए काफी था कि इस दौर की शारीरिक चुनौतियों से वह भी गुजर रही है। प्रशंसकों ने उसकी इस ईमानदारी और सहजता की खूब सराहना की ।

दीपिका और रणवीर सिंह ने अप्रैल में सोशल मीडिया के जरिए दूसरी प्रैग्नेंसी की घोषणा की थी। इस पोस्ट में उनकी बेटी दुआ भी नजर आई थी, जिसके बाद फैंस और फिल्मी सितारों ने इस जोड़े को खूब शुभकामनाएं दीं। सितंबर 2024 में बेटी दुआ के जन्म के बाद दीपिका लगातार फिल्म इंडस्ट्री में बेहतर कार्य-परिस्थितियों और महिलाओं के लिए संतुलित वर्क कल्चर की बात करती रही है। उसने सार्वजनिक रूप से आठ घंटे की कार्य अवधि का समर्थन किया, जिसे लेकर फिल्म इंडस्ट्री में भी काफी चर्चा हुई ।

फिल्मों की लंबी कतार

मातृत्व के इस खूबसूरत दौर के बावजूद दीपिका की फिल्मों की सूची बेहद मजबूत है। उसने शाहरुख खान के साथ अपनी बहुप्रतीक्षित फिल्म 'किंग' की शूटिंग पूरी कर ली है, जो दिसंबर में रिलीज होने वाली है। वहीं संजय लीला भंसाली की फिल्म 'लव एंड वॉर' में उसके विशेष भूमिका निभाने की चर्चा भी है।

वाणी कपूर का सबसे बड़ा दाव, ग्लैमरस इमेज छोड साधारण लडकी का किरदार निभायेंगी

बॉलीवुड में जहां ज्यादातर सितारे अपनी ग्लैमरस इमेज को बनाए रखने में लगे रहते हैं, वहीं वाणी कपूर ने अपने करियर में ऐसा जोखिम उठाया है, जिसकी शायद ही किसी को उम्मीद रही हो । लंबे समय से पर्दे से दूर रही वाणी अब फिल्म 'सर्वगुण संपन्न' के जरिए बिल्कुल नए अंदाज में वापसी करने जा रही है। खास बात यह है कि इस बार वह न तो हाई - फैशन लुक में नजर आएगी और न ही किसी स्टाइलिश अवतार में, बल्कि छोटे शहर की एक साधारण, चश्मा पहनने वाली लड़की के किरदार में दिखाई देगी।

वाणी ने इस बार अपनी स्थापित ग्लैमरस इमेज से बाहर निकलकर ऐसा दाव खेला है, जो उसके अभिनय करियर लिए एक नया मोड़ साबित हो सकता फिल्म की सबसे दिलचस्प बात इसकी कहानी है। इसमें वाणी एक ऐसी युवती बनी है, जिसका चेहरा पोर्न फिल्मों की एक स्टार से मिलता-जुलता है । यही समानता उसकी जिंदगी में ऐसी मुश्किलें खड़ी कर देती है कि उसे हर कदम पर लोगों की धारणाओं, तानों और सामाजिक फैसलों का सामना करना पड़ता है। हालांकि, फिल्म का फोकस किसी सनसनीखेज विषय पर नहीं, बल्कि इस बात पर है कि समाज अक्सर किसी इंसान को उसके व्यक्तित्व से ज्यादा उसकी छवि के आधार पर आंकता है।

खत्म होगा दो साल का इंतजार

यह फिल्म करीब दो साल से रिलीज का इंतजार कर रही थी। 2023 में पूरी होने के बावजूद किसी वजह से सिनेमाघरों तक नहीं पहुंच सकी । अब आखिरकार इसे ओ.टी.टी. प्लेटफॉर्म पर रिलीज किया जा रहा है। ऐसे में वाणी के प्रशंसकों को भी लंबे इंतजार के बाद उसे एक नए अंदाज में देखने का मौका मिलेगा।

आसान नहीं था यह किरदार निभाना

बताया जाता है कि इस किरदार को निभाना वाणी के लिए आसान नहीं था। निर्देशक सोनाली रतन देशमुख चाहती थीं कि वाणी सिर्फ अभिनय न करे, बल्कि उस किरदार को पूरी तरह जीए । यही वजह रही कि शूटिंग शुरू होने से पहले अभिनेत्री ने लगभग तीन महीने तक लगातार तैयारी की । स्क्रिप्ट रीडिंग, अभिनय कार्यशालाएं, भाषा, बॉडी लैंग्वेज, हाव-भाव और छोटे शहर की लड़कियों की जीवनशैली को समझने पर विशेष ध्यान दिया गया। टीम का उद्देश्य था कि पर्दे पर वाणी नहीं, बल्कि वही लड़की दिखाई दे जिसकी कहानी फिल्म कहती है ।

आदतों में किए बदलाव

वाणी ने अपने ग्लैमरस व्यक्तित्व से बाहर निकलने के लिए कई छोटी-छोटी आदतों में भी बदलाव किए। मेकअप को बेहद सीमित रखा गया, पहनावे में सलवार-कमीज और साधारण लुक अपनाया गया तथा किरदार की सहजता बनाए रखने के लिए उनकी चाल-ढाल तक पर काम किया गया। जहां सितारे अक्सर स्टाइलिश लुक के लिए चर्चा में रहते हैं, वहीं वाणी का यह बदलाव चर्चा का विषय बन गया है।

वाणी भी इस फिल्म को अपने करियर की सबसे अलग फिल्मों में से एक मानती है। उसका कहना है कि कहानी का मूल संदेश पहचान और समाज द्वारा लगाए जाने वाले तमाम लेबल्स से जुड़ा है। उसे यह बात सबसे ज्यादा पसंद आई कि फिल्म गंभीर विषय को हल्के-फुल्के हास्य और भावनात्मक अंदाज में पेश करती है। उसके अनुसार दर्शकों को मनोरंजन के साथ सोचने के लिए भी काफी कुछ मिलेगा।

काम नहीं, कहानी है पहली पसंद

वाणी का कहना है कि पिछले कुछ समय से वह अपने करियर को लेकर बेहद चयनात्मक हो गई है। उसने खुलकर कहा कि वह सिर्फ वही फिल्में करना चाहती है, जो उसे भीतर से संतुष्ट करें। यहां तक कि उसने अपनी टीम से साफ शब्दों में कह दिया है कि अगर सही सक्रिप्ट नहीं मिली तो वह काम छोड़ने से भी नहीं डरती।

उसके अनुसार लगातार काम करते रहना ही सफलता नहीं है, बल्कि सही कहानी चुनना ज्यादा महत्वपूर्ण है। शायद यही सोच 'सर्वगुण संपन्न ' जैसी फिल्म तक उसे लेकर आई। जहां एक ओर बॉलीवुड में बड़ी स्टारकास्ट और मसाला फिल्मों की होड़ लगी हुई है, वहीं वाणी ने एक ऐसी कहानी चुनी है, जो सामाजिक सोच, पूर्वाग्रह और आत्मसम्मान जैसे विषयों को मनोरंजन के साथ जोड़ती है।

शकुंतला देवी के 6 साल: असाधारण महिलाओं को पर्दे पर जीवंत करने में माहिर हैं विद्या बालन

मुंबई फिल्म शकुंतला देवी को रिलीज हुए छह साल हो चुके हैं, लेकिन यह फिल्म आज भी विद्या बालन की उस खास क्षमता की मिसाल है, जिसके जरिए उन्होंने असाधारण महिलाओं की कहानियों को पर्दे पर बेहद सहज और भावनात्मक तरीके से पेश किया। यही वजह है कि समय के साथ विद्या बालन बॉलीवुड की उन भरोसेमंद अभिनेत्रियों में शामिल हो गई हैं, जो मजबूत महिला किरदारों को पूरी गरिमा और गहराई के साथ निभाने के लिए जानी जाती हैं। यह उनकी प्रतिभा क्षमता ही है, जहां उन्होंने द डर्टी पिक्चर में ग्लैमरस सिल्क स्मिता से प्रेरित किरदार निभाने से लेकर महान गणितज्ञ शकुंतला देवी का किरदार निभाकर इन असाधारण महिलाओं की कहानियों को यादगार बनाया।

सच पूछिए तो शकुंतला देवी का किरदार निभाना सिर्फ उनकी शानदार गणितीय प्रतिभा दिखाने तक सीमित नहीं था। विद्या ने उनके आत्मविश्वास, हाजिरजवाबी, आकर्षक व्यक्तित्व और भावनात्मक पहलुओं को भी बखूबी पर्दे पर उतारा। उन्होंने शकुंतला देवी को सिर्फ एक महान गणितज्ञ के रूप में नहीं दिखाया, बल्कि एक ऐसी महिला के रूप में पेश किया, जो अपने सपनों और महत्वाकांक्षाओं के साथ-साथ मां होने और निजी रिश्तों को भी संभालने की कोशिश कर रही थी।

उनके अभिनय की यही खूबी थी कि दर्शक महान शख्सियत के साथ-साथ उनके पीछे छिपे इंसान से भी जुड़ गए। आज भी शकुंतला देवी विद्या बालन के करियर की यादगार फिल्मों में शामिल है।

राजेश खन्ना और मुमताज की जोड़ी ने बना दिया था एक यादगार दौर

हिंदी सिनेमा के इतिहास में कुछ जोड़ियां ऐसी रही, जिन्हें दर्शक बेहद पसंद करते थे। 1970 के दशक में ऐसी ही एक जोड़ी थी राजेश खन्ना और मुमताज की। दोनों जब पर्दे पर साथ आते थे तो उनकी बातचीत, हंसी-मजाक और रोमांटिक अंदाज दर्शकों को बहुत पसंद आता था। इसी शानदार केमिस्ट्री की वजह से दोनों की जोड़ी इतनी मशहूर हुई कि समय के साथ उनकी दोस्ती और रिश्ते को लेकर कई तरह की चर्चाएं भी होने लगीं। हालांकि, दोनों ने हमेशा अपने रिश्ते को एक अच्छी दोस्ती का नाम दिया। मुमताज का जन्म 31 जुलाई 1947 को मुंबई में हुआ था। उनका पूरा नाम मुमताज अस्करी था। उनका बचपन फिल्मी दुनिया से जुड़ा रहा और उन्होंने बहुत कम उम्र में फिल्मों में काम करना शुरू कर दिया था। शुरुआत में उन्हें छोटे-छोटे किरदार मिले। एक समय ऐसा भी था, जब उन्हें सिर्फ एक्शन फिल्मों की अभिनेत्री के तौर पर देखा जाता था। मुमताज ने अभिनेता दारा सिंह के साथ कई फिल्मों में काम किया। इन फिल्मों से उन्हें लोकप्रियता तो मिली, लेकिन असली पहचान तब मिली, जब उन्होंने बड़े सितारों के साथ मुख्य भूमिकाएं निभानी शुरू कीं। धीरे-धीरे उनकी खूबसूरती, अभिनय और डांस की चर्चा होने लगी।

उन्होंने 'दुश्मन', 'प्रेम नगर', 'रोटी', 'खिलौना', 'महबूबा', 'ये रात फिर ना आएगी', 'हमराज', 'ब्रह्मचारी' और 'चोर सिपाही' जैसी फिल्मों में काम किया। इसी दौर में उनकी जोड़ी राजेश खन्ना के साथ बनी। राजेश खन्ना उस समय हिंदी सिनेमा के सबसे बड़े सितारों में से एक थे। उनके रोमांटिक अंदाज और अभिनय के लाखों प्रशंसक थे।

जब मुमताज और राजेश खन्ना ने साथ काम किया तो दोनों की स्क्रीन पर मौजूदगी ने दर्शकों का दिल जीत लिया। दोनों ने 'दो रास्ते', 'सच्चा झूठा', 'आप की कसम' और 'अपना देश' जैसी फिल्मों में साथ काम किया। दोनों के बीच शानदार केमिस्ट्री दिखाई देती थी। उनके रोमांटिक सीन्स बनावटी नहीं लगते थे। मुमताज की चंचलता और राजेश खन्ना का आकर्षक अंदाज एक-दूसरे के साथ अच्छा मेल खाता था। यही वजह थी कि दर्शक उनकी जोड़ी को बार-बार देखना चाहते थे। इनके गाने भी बहुत लोकप्रिय हुए और उनकी जोड़ी उस दौर की सबसे सफल जोड़ियों में गिनी जाने लगी।

मुमताज को करियर का सबसे बड़ा सम्मान फिल्म 'खिलौना' के लिए मिला। इस फिल्म में उनके अभिनय को काफी सराहा गया और उन्हें फिल्मफेयर सर्वश्रेष्ठ अभिनेत्री का पुरस्कार मिला।

1974 में मुमताज ने बिजनेसमैन मयूर माधवानी से शादी कर ली। शादी के बाद, उन्होंने फिल्मों से दूरी बना ली और अपने परिवार को समय देने का फैसला किया। उस समय वह अपने करियर की पीक पर थीं, इसलिए उनका फिल्मों से दूर जाना कई लोगों के लिए हैरानी की बात थी।

रियलिटी शो ' लॉक अपः सच या सजा' में श्रेया के हैरान करने वाले खुलासे

रियलिटी शो ' लॉक अपः सच या सजा' में हर नए टास्क के साथ रिश्ते बदलते नजर आ रहे हैं। हाल ही में श्रेया कालरा का गुस्सा राम कपूर पर फूटा है। एक टास्क में जीत की खुशी में राम कपूर ने श्रेया के माथे और गाल पर कई बार किस कर दिया। उसने तंज कसते हुए कहा, "इतना तो मेरा बाप भी मुझे चुम्मी नहीं करता, अब बस करिए। उसने राम कपूर के व्यवहार को लेकर कहा कि जब शिवांगी अपना टास्क कर रही थी, तब राम कपूर उसके काफी करीब चला गया था । इसके बाद राम कपूर ने 'सॉरी' भी कहा, लेकिन उसे उसका यह रवैया बिल्कुल पसंद नहीं आया।

श्रेया ने बातचीत के दौरान आरोप लगाया कि राम कपूर बातचीत करते समय लोगों के बहुत करीब आ जाता है। हर किसी को अपनी मर्यादा बनाए रखनी चाहिए और यह समझना चाहिए कि किस हद तक किसी के करीब जाना सही है।

यही नहीं, श्रेया ने आगे कहा, "मैं तीन बार राम कपूर के लिए खड़ी रही, लेकिन उन्होंने मेरे समर्थन के लिए एक उंगली तक नहीं उठाई। मुझे उनकी सीनियरिटी पर शर्म आती है। ऐसे सीनियर्स पर मैं थूकती हूं।

बता दें कि सोशल मीडिया इंफ्लुएंसर, डिजिटल कंटैंट क्रिएटर और मॉडल श्रेया ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्मों पर फैशन, ब्यूटी, ट्रैवल और लाइफस्टाइल से जुड़े कंटैंट के जरिए लोकप्रियता हासिल की है।

उसने हाल ही में शो में एक और हैरान करने वाला खुलासा किया है कि बचपन में वह यौन शोषण का शिकार हो चुकी है।

श्रेया, जो हमेशा दूसरों को अपने हक के लिए बोलने को कहती है, उसे इस बात का दुख है कि वह अपने लिए नहीं बोल पाई।

श्रेया ने बताया, "मेरे एक कजिन ने मेरे साथ छेड़छाड़ थी। तब मैं 13 साल की थी। मेरे परिवार को इस बारे में पता नहीं है। सिर्फ ऋषभ जयसवाल (दोस्त) को ही पता है । मैं अपनी नानी के घर जाती थी, जहां हम हॉल में सोते थे और उस समय मुझे पता भी नहीं चलता था कि क्या हो रहा है। वह मुझे पकड़ता था । मुझे कोई सहानुभूति नहीं चाहिए। मैं खुद को पीड़ित दिखाने वालों में से नहीं हूं।

"मैं नहीं चाहती कि बाहर जाने पर लोग मेरे प्रति सहानुभूति दिखाएं। बस मैं नहीं चाहती कि मेरी मां को यह पता चले, क्योंकि जिस लड़के ने मेरे साथ ऐसा किया था, उसकी मां की मौत हो गई थी और मेरी मां ने लगभग 3 साल तक उसकी देखभाल की।

उसने आगे कहा, "नवंबर में मेरे सगे भाई की शादी होने वाली है और उसकी पिछली सगाई इसलिए टूट गई थी, क्योंकि मैं इस इंडस्ट्री में हूं और कुछ विवाद हुए थे । इसलिए मैं नहीं चाहती थी कि यह बात सामने आए। उसकी शादी हो रही है और उसके पास खुश रहने का मौका है और मुझे लगता है कि मैं इसे फिर से बर्बाद कर दूंगी।

नीतीश भारद्वाज ने रणबीर कपूर को दी सलाह

रामायण का ट्रेलर देखने के बाद बोले- कृपया अपनी वाणी को अब और प्रदूषित न करें

टीवी सीरियल 'महाभारत' में भगवान श्रीकृष्ण का किरदार निभाने वाले एक्टर नीतीश भारद्वाज ने गुरुवार को नितेश तिवारी की फिल्म 'रामायण' के ट्रेलर को लेकर अपनी प्रतिक्रिया दी। उन्होंने फिल्म के विजुअल इफेक्ट्स (VFX), कलाकारों की परफॉर्मेंस और संगीत की तारीफ करते हुए रणबीर कपूर को सलाह दी।

नीतीश भारद्वाज ने इंस्टाग्राम पर 'रामायण' का ट्रेलर शेयर करते हुए लिखा, बेस्ट फॉरेन फिल्म के लिए यह 100% ऑस्कर की हकदार है। बधाई हो नमित। नितेश तिवारी, सत्यजीत रे और शेखर कपूर के बाद भारतीय सिनेमा की दुनिया को भारत का अगला बड़ा तोहफा हैं। प्रोडक्शन डिजाइन और सिनेमैटोग्राफी (DOP) के लिए यह फिल्म कई पुरस्कार जीत सकती है। VFX और AI की मदद से बनाया गया इसका पीरियड वर्ल्ड शानदार है। भारतीय सिनेमा के साथ कोलेबोरेट करने के लिए महान संगीतकार हैंस जिमर का भी धन्यवाद।

रणबीर कपूर को सलाह देते हुए उन्होंने लिखा, रणबीर अब रणवीर के साथ अगली पीढ़ी के दो बेजोड़ धुरंधरों की बराबरी पर हैं। यश, ग्लोबल सिनेमा में आपका स्वागत है। आरके, मैं आपको हमेशा एक एक्टर के रूप में पसंद करता रहा हूं, लेकिन अब आपकी सामाजिक जिम्मेदारी शुरू होती है कि आप भारत की विरासत, संस्कृति, मूल्यों और परंपराओं को आगे बढ़ाएं। इसलिए अब 'एनिमल' जैसी फिल्में नहीं, चाहे उसके लिए कितना भी बड़ा ऑफर क्यों न मिले। कृपया अपनी वाणी को अब और प्रदूषित न करें। भारत के पास आपकी अभिनय क्षमता को दिखाने के लिए कहानियों की कोई कमी नहीं है।

पोस्ट के अंत में उन्होंने लिखा, मुझे सिर्फ यही उम्मीद है कि भारतीय दर्शक साई पल्लवी को सीता के रूप में स्वीकार करेंगे। साथ ही, मैं चाहता हूं कि फिल्म में कहीं न कहीं मृदंगम और मंजीरे की धुनों के बीच गोस्वामी तुलसीदास जी की चौपाइयां भी सुनाई दें। यही इस महाकाव्य की वह ध्वनि है, जो हर भारतीय की आत्मा में बसती है। मैं नितेश तिवारी की इस भव्य फिल्म को बनाने की मेहनत के सम्मान में 'रामायण' कम से कम 5 बार देखना चाहूंगा।

नितेश तिवारी की फिल्म 'रामायण' के पहले पार्ट का ट्रेलर कल रिलीज हो गया। मेकर्स ने इसे 30 जुलाई को सुबह 4:15 बजे, ब्रह्म मुहूर्त के शुभ अवसर पर दुनिया भर में लॉन्च किया। 'रामायण' के ट्रेलर को हिंदी, तमिल, तेलुगु, कन्नड़ और मलयालम समेत कई भाषाओं में एक साथ डिजिटल प्लेटफॉर्म्स पर रिलीज किया गया।

ऑस्कर विनर्स एआर रहमान और हैंस जिमर दे रहे म्यूजिक

फिल्म के संगीत को लेकर भी काफी समय से चर्चा बनी हुई है। इस फिल्म में दो दिग्गज म्यूजिशियन एआर रहमान और ऑस्कर विजेता हैंस जिमर पहली बार एक साथ मिलकर बैकग्राउंड स्कोर और संगीत तैयार कर रहे हैं। फिल्म का निर्माण नमित मल्होत्रा के प्राइम फोकस स्टूडियोज और एक्टर यश के मॉन्स्टर माइंड क्रिएशंस के तहत किया जा रहा है। इस ग्रैंड प्रोजेक्ट को दो भागों में बनाया जा रहा है, जिसका पहला पार्ट नवंबर 2026 में दिवाली के मौके पर सिनेमाघरों में रिलीज होगा।

4000 करोड़ के बजट में बन रही देश की सबसे महंगी फिल्म

'दंगल' जैसी ब्लॉकबस्टर फिल्म बना चुके डायरेक्टर नितेश तिवारी पिछले कई सालों से इस प्रोजेक्ट पर काम कर रहे हैं। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक, दो भागों में बनने वाली इस फिल्म का कुल बजट 4000 करोड़ रुपए के करीब है, जो इसे भारतीय सिनेमा के इतिहास की सबसे महंगी फिल्म बनाता है। फिल्म के विजुअल इफेक्ट्स (VFX) की जिम्मेदारी ऑस्कर विनिंग कंपनी DNEG संभाल रही है।

Printed and Published by **GANTYADA APPARAO** on behalf of **GANTYADA APPARAO**, Printed at Sri Sai Ganga Printers and Publishers Flat No: 504, Bharat Towers, 5th Lane, Dwaraka Nagar, Visakhaptanam, Andhra Pradesh-530016, and Published at H.NO: 38-4-216, MAHARANI STREET, MARRIPALEM, Visakhapatnam, Andhra Pradesh-530018, **Editor: GANTYADA APPARAO.** Mobile : 9059465965, **RNI : APHIN/26/A3657**, editorpenpower@gmail.com